International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-2629(Print), E-ISSN 2320-5466, Issue-3, Vol-I, March-2013

शोध पत्र- हिन्दी

''घबराये हुऐ शब्द'' काव्य संग्रह में शब्द गौरव

* डॉ. संजीव खैमरिया

* अतिथि व्याख्याता हिन्दी, शा. कन्या. महावि. शिवपुरी म.प्र.

लीलाधर जगूड़ी समकालीन कवियों में पमुख स्थान रखते हैं। उनकी रचनाओं में एक विचित्र प्रकार की अर्थवत्ता देखी जा सकती है। घबराये हुऐ शब्द उनका काव्य संग्रह है जिसमें उन्होंने अपने वर्तमान की विद्रूपताओं को तहखी दृष्टि से पहचाना भी है और उसे विभिन्न बौद्धिक प्रतीकों से महसूस भी कराया है। यह संग्रह 1981 में प्रकाशित हुआ था और 80 का दशक वैसे भी क्रांतिकारी परिवर्तन का दशक रहा है जिसने राजनीति के कई मुखौटे उतारकर जनता को उनकी वास्तविक स्थिति का अहसास कराया। इस संग्रह में उन्होंने लघु अतिलघु और नातिदीर्घ प्रकार की कविताओं को शामिल किया है।

जगूड़ी जी की अभिव्यक्ति शैली अपने समकालीन कवियों से थोड़ी भिन्न है वे पहले वर्तमान की विसंगति को महसूस करते हैं फिर उसे एक रूपक के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। ऐसी शैली मुक्तिबोध की भी थी किंतु मुक्तिबोध आंतरिक अकथनीय अवर्णनीय अनुभूति को प्रस्तुत करते थे जबकि उन्होंने वर्तमान और यथार्थ समाज को इस प्रकार प्रतीकात्मक और रूपकात्मक शैली में प्रकट किया है। अर्थात् उनकी रचनाओं में एक से अधिक अर्थ ही प्राप्त होते हैं लेकिन प्रतीकों के माध्यम से वे उसे इस प्रकार प्रभावी ढ़ंग से रखते हैं कि पाठक उस पीड़ा की कल्पना या अनुभूति करने लगता है। शब्दों के चयन में वे सिद्ध हैं पूरी कविता में ही कोई भी एक शब्द या अन्य शब्द अपनी पूरी एक कहानी रखते हैं। यह शैली उनकी लगभग सभी कविताओं है। कुछ शब्दों में ही पूरे का पूरा विस्तृत अर्थ हमारे सामने क्रमशः नजर आ जाता है जैसे कि आतंकवादी द्वारा पोलियो ड्राप पिलाना क्या अर्थ रखता है–

''बच्चों को पोलियो ड्राप पिलाते आतंकी से आतंकी दोस्त ने कहा–

' अपना अंत बेहद करीब समझो'तुम अपने धर्म से भटक गये हो ''। एक अन्य कविता में उन्होंने चिड़िया और मां का अचूक रूपक दिया है– '' मां उस पुरानी घटना का नाम है, अपने पेट में अंडे लेकर चिड़िया बाजार गई लाला के आगे से सुतली,घोड़ेके आगे से घास, बूचड़ के आगे से बकरी के बाल,बच्चों के आगे से कागज लाकर उसने घोंसला बनाया, ..चींटी जिसे ले गई,हाथी वो कण नहीं उठा सका, पानी जितना चिड़िया ने पिया,नदी कभी समुद्र तक पहुंचा न सकी,

एक चिड़िया की भूख, एक चींटी की भूख एक हाथी की भूख, भूख चाहे किसी की हो मार एक है, शांति में खामोशी में सन्नाटे में तसल्ली के बाद जो पैदा होती है मां उस इच्छा का नाम है'' इस प्रकार की शैली उनके सभी काव्य संग्रहों में विद्यमान है। इस काव्य संग्रह में भी उनकी यह शैली देखी जा सकती है किंतु फिर भी उनके हर काव्य संग्रह में नवीनता नजर आती है। समय समय पर हुऐ वर्तमानगत परिवर्तनों के कारण उन्होंने कई बार अपने अनुभवों को भी परिवर्तनशील बनाया है। घबराये हुऐ शब्द काव्य संग्रह में वाकई में शब्दों के पीछे छिपी घबराहट देखी जा सकती हैं। वे शब्द उस वर्तमान की अव्यवस्था और विसंगतियों को काफी तीखी संवेदना से अभिव्यक्त करते हैं। इस संग्रह में भाव के स्थान पर शब्द ही उस वर्तमन को उजागर करते हैं अतः कविताओं में भी शब्दों मर्म समझकर ही कथ्य को समझा जा सकता है। जैसे इन पंक्तियों में जिंदगी और मौत शब्द में कई अर्थ निकाले जा सकते हैं–

1''उसने तीन चार प्यारे प्यारे नामों से मौत को पुकारा पर मौत नहीं आई उसके बाद अचानक मौत ने जिंदगी को तीन चार प्यारे प्यारे नामों से पुकारा बस इतनें में वहां हजारों लाशें बिछ चुकी थीं''1 आगे एक अन्य कविता में भी मौत शब्द एक विशिष्ट अर्थ लिये हुऐ है–

2''कसम खाये बिना जहां किसी बात को सच न माना जाये और उसके बाद भी सच्चाई संदिग्ध हो,जहां कानून को भी यकीन न हो और अपराधी को भी वहां घबराना स्वाभविक है तब तो और भी ज्यादा जब कोई हद हो जैसे कि मौत''[2]

है जो इन पंक्तियों में और अकेला शब्द के बार बार प्रयोग में देखा जा सकता है–

इसी प्रकार इन पंक्तियों में सोना और नमक शब्द भी अपना विशेष अर्थ प्रस्तुत करते हैं–

3''जब उसने कहा कि अब सोना नहीं मिलेगा तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा पर अगर वह कहता कि अब नमक नहीं मिलेगा तो शायद मैं रो पड़ता''[3]

अकेला आदमी हर दिन नई समस्यायें झेलता है परंतु समस्यायें उसे कभी नहीं छोड़तीं ऐसे में अकेला इंसान नित नये संकट झेलता है तो समय के मानकों की अधिकता को देखकर वह यही अनुभव करता

4''तारीखें भी तीस और आदमी अकेला, हफते भी चार और

आदमी अकेला, महीने भी बारह और आदमी अकेला, ऋतुऐं भी छः और आदमी अकेला, वर्ष भी अनेक और आदमी अकेला ,काम भी बहुत से और आदमी अकेला''[4]

21वी सदी की ओर तेजी से भागता विश्व ताकत के पीछे दीवाना है वह ऐसी ताकत पाना चाहता है जो विनाशकारी है और दूसरों का शोषण करने वाली है। लेकिन कवि को ऐसी ताकत चाहिये जो उस नजर अंदाज हो गये जन में जीवन का विश्वास जगाये जिसके अस्तित्व पर ही विश्व का अस्तित्व है–

5''जरूरत है पहलवानी और गुंडेपन से बाहर एक ऐसी ताकत की,जिसे लेकर कमजोर से कमजोर आदमी भी जीत जाये, ऐसी ताकत की जो बैंक के एकाउंट घर या फर्नीचर से तय न होती हो, जिससे आंख मिलाने पर ठंडे चूल्हे जल उठें कुरूप की अच्छाई दिखने लगे सुंदर के ऐब खुल जाये,जरूरत है एक ऐसी ताकत की जिसके लिये आदमी को आदमी से घृणा न करनी पड़े (अगर कहीं हो या किसी में मिल जाये तो जो हैं पर दिख नहीं रहे हैं उनसे संपर्क करें)''[5]

एक अन्य कविता में भी उन्होंने ताकत शब्द के कई अर्थ प्रस्तुत किये हैं–

6''घोड़े के बाल बराबर ताकत भी बहुत है बाल बाल ताकत जैसे एक ब्रुश जो बहुत कुछ साफ कर दे धूल हो दांत हो जूता हो फर्श हो लेकिन एक टॉनिक जो पिया नहीं गड़बड़ कर देता है आत्मबल नसें तार करती हैं कि आंखें जिसे प्यार करतीं हें उसे विटामिन सी की जरूरत है तुम्हारी नहीं''[6]

ऐसे शक्तिलोलुप देश जिन्हें दूसरों को मिटाने के प्रपंच रचने से बिल्कुल फुर्सत नहीं है उनके लिये सिर्फ आदिम सिद्धांत ही प्रमुख आदर्श हैं । विश्व की वर्तमान परिस्थिति को उन्होंने प्रभावपूर्ण शब्दों के द्वारा प्रत्यक्ष करने का प्रयास किया है। प्रधानता यहां भी शब्दों की ही है–

7''जिन्हें मरने की भी फुर्सत नहीं थी उन्हें भी मैंने मरा हुआ देखा है पर उस तरह नहीं जिस तरह,एक बच्चा मरता है जिसकी न कहीं कब्र होती है न कोई चिता जलती है बच्चों के लिये गड्डे खोदे जाते हैं ठीक जैसे हम पेड़ लगाने के लिये खोदते हैं

उन्हें भी मैं जानता हूं जो बूट पहनते हैं पर एक बार भी मरे हुऐ जानवरों को याद नहीं करते जबकि बंदूक को वे एक बार भी नहीं भूल पाते उनमें से कुछ तो दुनिया के सायरनों के मालिक हैं जो तीन चार शहरों को नहीं बल्कि पांच छः मुल्कों को हर साल खंदकों में उतार देते हैं

उनका एलान है कि,घर एक आदिम खंदक हैं,और जमीन एक बहुत बड़ी कब्र का नाम है,इसलिये लोगो मेरी कविता हर उस इंसान का बयान है जो बंदूकों के गोदाम से अनाज की ख्वाहिश रखता है, मेरी कविता हर उस आंख की दरख्वास्त है जिसमें आंसू हैं ये,जो हरी घास के टीले हैं,ये,जो दरवाजों से सटेहुऐ हवाके झोंके हैं,ये अब थोड़े दिनों की,दास्तान हैं''7

आकाश के शब्दों में 'आदमी के अंदर उससे भी ज्यादा न जाने क्या क्या भरा पड़ा है'। आकाश अपने अंदर पृथ्वी समाये है जो उसे कुछ होने का अहसास कराती है किंतु आदमी जिस पर जीवित है वह उसे भी अपनी दुर्भावना से मिटाने तुला है इसीलिये आकाश सोचता है कि शायद आदमी पर पृथ्वी से भी महत्वपूर्ण चीज है जिसके लिये वह उसे भी मिटा सकता है। इन पंक्तियों में इस चिसंगति को देखा जा सकता है–

8''मेरे मन में कई चीजें हैं मैं खूब अंधेरे हैं और खूब उजाले से भरा हुआ हूं मगर केवल पृथ्वी है तो मुझे लगता है मेरे भीतर कुछ है, अंधेरे और उजाले के बीच मेरे भीतर एक और चीज है आदमी उसके भीतर मुझसे भी ज्यादा कुछ है''[8] पेड़ों की महत्ता और उनकी आवश्यकतरा किसी से छिपी नहीं है। उनके द्वारा बहार के मौसम का इंतजार नैसर्गिक है किंतु इस कविता में उस प्रतीक से कई और अर्थ्रा भी ध्वनित होते हैं–

9''ये दो से पांच फुट जमीन पर खड़े पेड़ सौ फुट तक छाया हजार तक हरियाली फेंफड़ों तक हवा और कोसों तक बसंत देते हैं अपने जन्मते ही जो मोची और दर्जी बन जाते हैं और सिलना शुरू कर देते हैं जमीन को पर खुद के बारे में वे यह भी नहीं जानते हैं कि हमें सींचनेवाले बहुत लोग नहीं हैं इसलिये उन्हें एक पूरी ऋतु चाहिये प्यास की नहीं पानी की एक पूरी ऋतु''[9]

अंधेरे वर्तमान में छिपी भविष्य की आशा की किरण यद्यपि दुर्लभ कल्पना है। किंतु उस सुख की पूव्र अनुभूति भी अपने आप में कम महत्व नहीं रखती। चाहे वह कुछ क्षण की ही साबित क्यों न हे लेकिन इस भयंकर वर्तमान में अच्छे भविष्य की आशा जीवित बने रहने के लिये आवश्यक है। यह महत्व हम इन पंक्तियों में देख सकते हैं–

10''कपड़ेकी तरह,निचोड़े हुऐ,फटकारे हुऐ,वर्तमान को,भविष्य से भिगोती है,बूंद बूंद रिसतीहुई काली रात अभी इस बागीचे का वह हिस्स भी डूब जायेगा जिसमें सबसे ज्यादा पराग होगा कल सबसे ज्यादा मीठे फल होंगे और उनसे भी कोमल और शुद्ध होगी हवा खुशी कई बार आयेगी ऐसे कि जेब में हो जब चाहे छूलें देख लें और खर्च कर डालें मगर बस उतनी देर जितने में तितली एक फूल पर बैठे और उड़ जाये पर चाहे जितनी देर को हो खुशी फिर भी एक अहम बात है''[10]

एक ही तत्व से संबंधित होने का मतलब यह नहीं कि दो वस्तुऐं एक जैसा ही कार्य करेंगी। समाज में एक ही मूल से शक्ति पाकर दोनों शासक औा शासित एक साथ रहते हैं किंतु यह आवश्यक नहीं कि दोनों में मित्रता हो बल्कि जहां भी दो तत्व होंगे वहां नैसर्गिक संघर्ष होगा ही किंतु अधिकांशतः शक्ति शोसक में ही अपना निवास ढूंढ़ती है और कल्याणकारी कमजोर ही रह जाता है–11''जरूरी नहीं कि जो एक ही जगह

के हैं वे आपस में दोस्त भी हों, लगभग एक जैसी ऊंचाई पर रहते हैं पहाड़ और बादल इंद्रधनुष और ओले हिरन और चीता एक ही जगह के रहने वाले हैं छूना और चिकोटना इसी तरह एक ही चीज को लेकर हुनर दो हो सकते हैं जैसे चेहरे पर चुंबन और घूंसे''[11]

महंगाई के दौर में किसी सरकारके आगे प्रार्थना करना बेमानी है इससे अच्छा तो फलों से ही प्रार्थना की जाये कि वे ही सड़ जायें तो कम से कम गरीब आदमी उन्हें खा तो सकता हैं। फलों में थोड़ा रस तो है शायद वे मान जायें इन महंगाई के जनकों में तो तरलता है ही नहीं जो इनसे कोई रहम की उम्मीद भी की जाये इसीलिये कवि स्वयं फलों से ही प्रार्थना कर रहा है–

12''फलो जब महंगे बेचे जाओ तो तुरंत सड़ जाया करो छूते ही या देखते ही''[12] इसीलिये ऐसे सोये हुऐ शासक को हिलाये बिना वह नहीं जागेगा क्योंकि हिलाने से बच्चा सोता है और राजा जागता है और शासक को जगाकर ही देश को बचाया जा सकता है– 13''बच्चा सोता है हिलाने से राजा जागता है''[13]

उपरोक्त सभी उदाहरणों में यह बात लगातार सिद्ध हुई है कि उनमें शब्दों का विशेषाधिकार से प्रयोग किया गया है। हर कविता में कुछ शब्द बड़े अचूक हैं जिनमें कई अर्थ भी हैं और उनमें छिपी गहरी संवेदना भी है। इस काव्य संग्रह में भी यह चरितार्थ हुआ है किंतु जिस दौर में यही लिखा गया है उसके आधार पर इसके शब्दों का स्वरूप देखकर इसका शीर्षक पूर्णतः उपयुक्त ही प्रतीत होता है। कुल मिलाकर घबराये हुऐ शब्द काव्य संग्रह शब्दगौरव से भरा पड़ा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हैसियत–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधर जगूड़ी राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
2. हद–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधर जगूड़ी राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
3. तो–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधर जगूड़ी राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
4. अकेला–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधर जगूड़ी राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
5. जरूरत है–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्रका.नई दिल्ली।
6. झटका–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधर जगूड़ी राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
7. लड़ाई–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधर जगूड़ी राजकमल प्रका. नई दिल्ली।
8. उद्घाटन–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्रका.नई दिल्ली।
9. एक पूरी ऋतु–कविता–'घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्र.नई दिल्ली
10.एक अहम बात–कविता''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्र.नई दिल्ली
11.विरोधी–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्रका.नई दिल्ली।
12. प्रार्थना–कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्रका.नई दिल्ली।
13. से –कविता–''घबराये हुऐ शब्द''काव्य संग्रह–लीलाधरजगूड़ी राजकमल प्रका.नई दिल्ली।